thearyasamaj.org

RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2015-17

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक
आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

मूल्य : 2 रु.
वर्ष: 71 अंक :51
सृष्टि संवत् 1960853115
29 मार्च 2015
दयानन्दाब्द 189
वार्षिक : 100 रु.
आजीवन : 1000 रु.
दूरभाष : 2292926, 5062726

जालन्धर

वर्ष–71, अंक : 51, 26/29 मार्च 2015 तदनुसार 16 चैत्र सम्वत् 2071 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

आदर्श गुणों के प्रतीक–मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम

–ले० श्री सुदर्शन शर्मा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

भारत में प्रतिवर्ष चैत्र सुदि नवमी को राम नवमी का पर्व बड़े उत्साह और भक्तिभाव से मनाया जाता है और भारत भर का हिन्दू चाहे वह किसी भी समुदाय से सम्बन्ध क्यों न रखता हो, इस दिन भगवान श्रीराम का जन्मदिवस मनाकर अपने आपको कृत-कृत्य समझता है। इसमें कोई भी सन्देह नहीं कि भारत में और भी बड़े-बड़े महापुरूष तथा ऋषि-मुनि हुए हैं किन्तु भगवान राम के प्रति आस्था रखने वाले लोगों की संख्या इतने लाख वर्षों के बीत जाने के बाद भी कम नहीं हुई और न ही उनकी मान्यता में कोई कमी आई है। यदि इसके कारणों पर विचार करें तो यह पता चलता है कि भगवान राम का जीवन कुछ इस तरह से भारत के जन-जन के हृदय पटल पर अंकित हो गया है कि उसे काल की कोई अवधि मिटा नहीं सकती। इस देश के लोग श्रीराम को मर्यादा पुरूषोत्तम कहते हैं।

इसका अर्थ यह है कि वह मनुष्य जो मर्यादा बना सकता है। भगवान राम उसकी अन्तिम सीमा थे। वह पुरूष भी उत्तम थे और उनकी मर्यादाएं भी उत्तम थी। उन्होंने मानव मात्र के लिए मर्यादा पालन का जो आदर्श प्रस्तुत किया था वह संसार के इतिहास में कहीं और नहीं मिल सकता।

उदाहरण के लिए उन्होंने अपना पहला आदर्श आज्ञाकारी पुत्र के रूप में प्रस्तुत किया। उनके पिता राजा दशरथ अपनी रानी कैकेयी से वचनबद्ध थे। रानी कैकेयी ने ठीक उस समय जब राम का राज्याभिषेक होने वाला था उसी समय राम को वनवास और अपने पुत्र भरत के लिए राज्यतिलक की माँग कर दी। दशरथ नहीं चाहते थे किन्तु अपने पिता के वचन का पालन करने के लिए भगवान राम ने एक पल में राज-पाट को त्याग दिया और वनवासी बनकर वनों को चले गए। पूरे चौदह वर्ष उन्होंने वन में बिताए ऐसा आदर्श कौन प्रस्तुत कर सकता है। संसार में जितने भी युद्ध और लड़ाईयाँ अब तक हुई हैं वह राज प्राप्ति के लिए हुई हैं किन्तु भगवान राम ने जो आदर्श प्रस्तुत किया उसकी तो कल्पना भी नहीं कर सकता।

दूसरा आदर्श उन्होंने एक आदर्श भाई का प्रस्तुत किया। यद्यपि भरत की माता कैकेयी ने उन्हें राज-पाट के बदले वनवास दिलाया था किन्तु श्रीराम ने भरत से न ईर्ष्या की और न द्वेष। वह निरन्तर भरत के प्रति अपना प्रेम प्रदर्शित करते रहे और उसे राज-काज सम्भालने की प्रेरणा करते रहे। उन्होंने उसे कभी अपना प्रतिद्वन्दी नहीं समझा। आज के समय में कोई इस प्रकार का आदर्श प्रस्तुत कर सकता है। आज के इस समय में जब जमीन जायदाद के लिए भाई-भाई के खून का प्यासा है। पतन के इस समय में मर्यादा पुरूषोत्तम राम के द्वारा स्थापित आदर्श भ्रातृप्रेम के आदर्श को अपनाकर उनसे प्रेरणा ले सकते हैं।

तीसरा आदर्श उन्होंने आदर्श पति का प्रस्तुत किया। वह चौदह वर्ष वनों में रहे और वनवासी होकर रहे ब्रह्मचर्य व्रत का पालन किया और वनों में रहने वाले ऋषियों-मुनियों की सेवा का व्रत लिया। जो राक्षस ऋषियों के यज्ञ में विघ्न डालते थे उन राक्षसों का संहार किया। इस काल में उन्होंने गृहस्थ की चिन्ता नहीं की अपितु अपनी सम्पूर्ण शक्ति को राक्षसों का संहार करने के लिए लगाया। रावण ने जब उनकी धर्मपत्नी सीता को चुराने का दुस्साहस किया तो भगवान श्रीराम ने इस दुष्कृत्य के लिए रावण का सर्वनाश कर दिया। सबसे बड़ी बात यह है कि वह एक आदर्श राजा थे। आज भी लोग राम राज्य की कामना करते हैं। राज्य तो था ही राजा के लिए किन्तु श्रीराम ने राजा का जो आदर्श प्रस्तुत किया उसे आज तक कोई भुला नहीं सकता। आज समस्त संसार राम राज्य की कामना और अभिलाषा रखता है। महात्मा गांधी भी अपने देश में राम राज्य की स्थापना करना चाहते थे। राम राज्य में कोई चोर नहीं था, कोई व्यभिचारी नहीं था, कोई भ्रष्टाचारी नहीं था। किसी प्रकार का कोई कष्ट क्लेश राम राज्य में नहीं था इसीलिए सारी प्रजा सुखी थी।

संक्षेप में भगवान राम की लाखों वर्ष पश्चात भी भारतीय जनमानस में स्मृति बने रहने का मूल कारण उनका अपना आदर्श जीवन है। ऐसा आदर्श महापुरूष हमें समूचे इतिहास में कभी प्राप्त नहीं हो सकेगा। यही कारण है कि भगवान राम हिन्दू संस्कृति और सभ्यता के एक अभिन्न अंग बन गए हैं। राम नवमी के शुभ पर्व पर भगवान राम का पवित्र और आदर्श जीवन यही प्रेरणा देता है कि हम उनकी मर्यादाओं का पालन करते हुए अपने जीवनों, अपने परिवार और अपने देश को सुखी और शान्तमय बनाएं। इस वर्ष 28 मार्च को राम नवमी का पर्व आ रहा है। हिन्दू संस्कृति से जुड़े लोग अपने-अपने ढंग से इस पर्व को मनाते हैं। नगर कीर्तन तथा शोभायात्राओं के माध्यम से श्रीराम की झाँकियां निकाली जाती हैं। सारे देश में इस पर्व को बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है परन्तु आज हमें विचार करना है कि हम कहां तक मर्यादा पुरूषोत्तम राम की मर्यादाओं तथा उनके आदर्शों को अपने जीवन में उतारने का प्रयास कर रहे हैं। भगवान राम ने जो आदर्श और भ्रातृप्रेम के उदाहरण प्रस्तुत किए हैं उन आदर्शों को त्याग की भावनाओं को अपनाएं बिना हम राम राज्य की कल्पना भी नहीं कर सकते। भगवान राम के गुणों को, उनके आदर्शों को अपनाकर हम राम नवमी के पर्व को सार्थक कर सकते हैं।

thearyasamaj.org

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का आत्मिक दर्द

-ले० उम्मेद सिंह विशारद गढ़ निवास मोहकमपुर देहरादून

जन साधारण का विचार है कि परमात्मा अवतार धारण करके पृथ्वी पर जन्म लेते हैं, यह अज्ञान है, क्योंकि अजन्मा, अव्यय, निराकार, सृष्टिकर्ता ईश्वर साकार कैसे हो सकता है। किन्तु यह भी सत्य है कि मोक्ष से लौट कर मुक्त आत्मा अधर्म का नाश करने के लिये संसार में जन्म लेती है। संसार में मुख्य जन्म दो प्रकार का होता है। एक कर्मबद्ध जीवन और दूसरा कर्मों के बन्धनों से मुक्त जीवन। मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम योगीराज श्रीकृष्ण में व महर्षि दयानन्द सरस्वती में अन्तर था तो वह यह था कि श्री राम व श्री कृष्ण जीवन भर सत्य के लिये लड़े, कामनाओं के लिये लड़े तथा महर्षि दयानन्द ऋत सत्य व निष्काम के लिये लड़े व मरे। यह विचारणीय बात है।

इस लेख में मैंने कुछ महर्षि दयानन्द जी के आत्मीय दर्दों का उल्लेख किया है। सुधी पाठक प्रेरणा लेकर अन्यों को भी प्रेरित करेंगे।

नरबली अंधविश्वास का दर्द

महर्षि दयानन्द जी कहते हैं कि एक दिन की घटना को मैं भूल नहीं सकता। शाम होने वाली थी, सामने नदी थी और अमावश्य की रात जाने वाली थी, सोचा रात किस रूप में बिताऊँ। इतने में दूर से आवाजें आ रही थी, एक दस वर्ष के बालक को लोग नहला रहे थे और स्त्री पुरूष नाच रहे थे, मैं जिज्ञासावश वहाँ पहुँचा, पता चला आज अमावस्य है और महाकाली की गुफा में मध्य रात्री को इस बालक की बलि दी जायेगी। इसके माता-पिता का वंश धन्य हो जायेगा और इसके पिता को पुजारियों ने पचास रुपये दिये थे और मान्यता थी कि यह बालक देह छोड़कर गन्धर्व लोक चला जायेगा।

इस बात को सुनकर मेरे मन में तीन चिन्ताएं हुई-

1. मेरी माता ने मुझ पुत्र को खोकर ही देहत्याग किया था। यह माता अपने बालक का बलिदान देकर कैसे जीवित रहेगी।

2. इस महापाप के दण्ड भोग के लिये ही हमारी पुण्य भूमि धीरे-धीरे विदेशी वणिकों के कंवल में जा रही है।

3. धर्म के नाम पर ऐसे महापाप ऋषि मुनियों के देश में कैसे चालू हो गये। यह काल भैरव मन्दिर फतेहपुर के धर्मपुरी पुनघाट में स्थित है। इस शोभा यात्रा में मैं भी चलने लगा। अवसर देखकर पुरोहित से कहा इस बालक को छोड़ दो और मेरी बलि दे दो। मैं भी ब्राह्मण पुत्र हूँ। पुजारी बोले बड़े पुजारी की आज्ञा से ही विचार किया जा सकता है। वहाँ भयंकर भीड़ थी, पचास आदमी नंगी कटार लेकर नाच रहे थे। मेरी प्रार्थना स्वीकार हो गयी। मुझे नहला कर कुमकुम लगाया गया। खड्ग की पूजा हुई। काल भैरव के सम्मुख काठ की वेदी में मेरा सिर रखकर पुरोहित पाठ करने लगे। चारों ओर काल भैरव की जय के नारे लगने लगे। मैं चारों ओर देखकर मरने के लिये तैयार हो गया। पुरोहित के कान में मुंह लगाकर मंत्र पाठ किया और खड्ग घातक के हाथों में दे दिया। मेरी आँखों में कसकर पट्टी बाँधी गयी, बस बलिदान बाकी था।

लेकिन अचानक बन्दूक की तीन गोलियों की आवाज आयी, साथ ही लोग भागने लगे, चिल्लाकर कहने लगे, मरहटी फौज आ गयी है। सभी भाग गये। मैं अकेला बलिदान लकड़ से बंधा रह गया। उसी समय सिपाहियों ने मुझे मुक्त कर दिया। पता चला महाराष्ट्र सरकार ने बलि प्रथा पर प्रतिबन्ध लगा रखा है और यह अमावस्या में मन्दिरों में भ्रमण करते हैं। मैंने ईश्वर से कहा हे प्रभु मुझसे क्या कराना चाहते हैं। जो कि आप बार-बार मुझे प्राण दे रहे हैं।

गंगा किनारे घटिया घाट की घटना का दर्द

महर्षि दयानन्द एक बार फर्रूखाबाद के निकट घटिया घाट के किनारे ध्यान मग्न बैठे थे। उसी समय एक स्त्री अपने मरे हुए बच्चे को लेकर आयी और उसने अपने मरे हुए बच्चे को पानी में डाल दिया। छपाक की आवाज से महर्षि का ध्यान उस ओर गया और देखा कि वह स्त्री बच्चे का कफन उतार रही है। कफन उतार कर चलने लगी तो महर्षि ने हाथ जोड़कर कहा मां गंगा में क्या डाल दिया। उस स्त्री ने रोते हुए कहा कि यह मेरा लड़का है। मैं विधवा स्त्री हूँ, निर्धन हूँ। धनाभाव से इसका इलाज न करा सकी। महर्षि ने कहा, जिस ईश्वर ने दु:ख दिया, वही सुख भी देगा। परन्तु आपने कफन क्यों उतारा है। स्त्री ने कहा मैं निर्धन हूँ, कफन के लिए मेरे पास धन नहीं था। इसलिए अपनी साड़ी को आधा फाड़कर कफन बना लिया था। मैंने सोचा बच्चा तो वापिस आयेगा नहीं मुझे तो यहीं रहना है तो समाज में नग्न कैसे रहूँगी। इसलिए मैंने कफन उतार लिया इसे फिर से साड़ी से जोड़ दूँगी। ऋषिवर का हृदय द्रवित हो गया, आँखों में आँसू बह निकले। पता चलता है कि ऋषि के दिल में देश व समाज के प्रति कितनी वेदना थी।

एक हूक सी दिल में उठती है,
एक दर्द जिगर में होता है।

हम रात को उठकर रोते हैं,
जब सारा आलम सोता है।

मान्य पाठक, हम ऋषि के किस-किस दर्द की बात करें, वह तो पूर्ण रूप से दर्द निवारक देवता थे। एक छोटे से दर्द का वर्णन और करते हैं।

कोढ़ी को उठाना और उसका दर्द समझना

गुजरात के सोमनाथ मन्दिर में मेला लगा हुआ था, मेले के बाहर एक कोढ़ी पड़ा हुआ था। कोई कहता था मर गया, कोई कहता जिन्दा है, पता चला पुलिस ने मारते-मारते बाहर निकाल दिया है और कोई कहता था पैरों में रस्सी डालकर बाहर नदी किनारे छोड़ दो। मैंने समझ लिया, वह आदमी अभी जिन्दा है। इसके सारे शरीर में खून और पीप निकल रहा है। इसीलिए किसी ने सहायता नहीं दी। मैंने कपड़ा भिगोकर उसके मुंह में पानी डाला, तब उसने आंखें खोल दी थीं, तब तक पुलिस भी पहुंच गयी थी, मैंने कहा मेले में चिकित्सा व्यवस्था कहां है और इसको छोड़कर जाना भी ठीक नहीं था। (मैंने सहोसि सहो मयि देहि) मंत्र बोलकर कोढ़ी को पीठ के ऊपर उठाकर चिकित्सा केन्द्र में भर्ती करवा दिया, विदाई के समय उसने कहा बाबा मुझे मरने का आशीर्वाद दो और उसने देह छोड़ दिया। मैंने नदी में स्नान किया और योग गुरुओं की खोज में निकल पड़ा।

महर्षि के अन्य दर्दों का संकेत

मैंने छोटे-छोटे उदाहरण दिये। महर्षि दयानन्द के सम्पूर्ण जीवन का दर्द तो सत्य की स्थापना करना था। उन्होंने ईश्वर के सत्य के दर्शन कराये। उन्होंने पंच महायज्ञ के सत्य का ज्ञान दिया। उन्होंने जो मान्यताएं व कर्म मानव समाज को भयंकर हानि पहुँचाते थे। उस दर्द को समझा। जैसे ईश्वर के नाम पर पशु बलि, जाति पाति का छुआछूत का चलन, सती होने की कुप्रथा, विधवा का अभिशाप, कपोल कल्पित पौराणिक अवैदिक अनार्ष ग्रन्थों से मानव मात्र को हानि, मृतक भोज, काल्पनिक देवी देवताओं की पूजा, राष्ट्र की परतन्त्रता का कारण माना और जिन अनेक कुप्रथाओं द्वारा समाज खोखला होता जा रहा था। इस दर्द को समझा और उसका निराकरण भी किया।

युगों बाद धरती पर ऐसे महापुरुषों का आगमन होता है। तभी तो टंकारा की शिवरात्रि बोध रात्री बन गयी, जिसने सारे संसार का अन्धकार ही मिटा दिया। उस देवता ने एक निरन्तर ऋत सत्य का प्रचार करने हेतु आर्य समाज जैसे सर्वोच्च संगठन का गठन किया। धन्य हो ऋषि दयानन्द आपने अपने को बार-बार विष देने वालों को भी क्षमा करते हुए उनके दर्दों को समझ कर ऋत सत्य के लिये अपने प्राण न्योछावर कर दिये।

thearyasamaj.org

सम्पादकीय......

रामनवमी का पर्व

रामनवमी का पवित्र पर्व प्रतिवर्ष भारत भर में मनाया जाता है। महापुरूषों के जीवन प्रकाश स्तम्भ का काम किया करते हैं केवल उनके लिए जो अन्धकारप्रिय न होकर प्रकाश से विद्या से, सत् ज्ञान से प्रेम करने वाले होते हैं और निरन्तर शुभ कर्मों का अनुष्ठान करते हैं। राम का जीवन हर दृष्टि से पूर्ण जीवन है। शारीरिक, आत्मिक, सामाजिक और राष्ट्रीय उन्नति तथा उत्कर्ष का ढंग हम राम के जीवन चरित्र को पढकर तथा मनन कर सीख सकते हैं। सुख में दुख में, हर्ष और विषाद में, मान और अपमान में राम धृतिशील बने रहे। भगवान राम का जन्म इक्ष्वाकु कुल में राजा दशरथ के यहां हुआ था। राम अपने समय में अपनी गुण गरिमा से, आदर्श जीवन चरित्र से, उदार भावनाओं से समस्त अयोध्यावासियों के लिए एक सर्वोत्कृष्ट पथ प्रदर्शक सिद्ध हुए थे और इसी आधार पर वे मर्यादा पुरूषोत्तम विशेषण से सर्वत्र जगत् प्रसिद्ध हुए। भारतीय ऐतिहासिक परम्परा में प्राचीनतम लोक मर्यादा को सर्वथा अक्षुण्ण रखने में सूर्य कुल का उन्नायक, धर्म धुरन्धर, महापराक्रमी, नीति निपुण, सत्य प्रतिज्ञ, दृढव्रती, कार्यम वा साधयेयं देहं वा पातयेयम् के धनी भगवान राम का सम्पूर्ण जीवन अनुकरणीय है।

भगवान राम के गुणों के गुणों का वर्णन करते हुए बाल्मीकि ने बालकाण्ड और अयोध्याकाण्ड में जिस सुन्दरता से वर्णन किया है वह अनुपम है। समुद्र इव गाम्भीर्ये राम गम्भीरता में समुद्र के समान हैं। धैर्येण हिमवानिव अर्थात् धैर्य में पर्वतराज हिमालय के सदृश हैं। जिस प्रकार की प्रेरणा हमें मर्यादा पुरूषोत्तम राम के जीवन से मिलती है उतनी किसी अन्य के जीवन से नहीं। भगवान राम को आदि कवि ने आर्य उपाधि से विभूषित किया है- आर्य: सर्व समश्चैव सदैव प्रियदर्शन:। राम की एक और अभूतपूर्व विशेषता यह है कि-कदाचिदुपकारेणकृते नैकेन तुष्यति। न स्मरत्यपकाराणां शमप्यात्मवत्तया। अर्थात् वे लोगों के द्वारा किए गए एक ही उपकार से सन्तुष्ट हो जाते थे परन्तु सैकडों किए अपकारों को कभी भी स्मरण नहीं करते थे। महाकवि ने त्रेता युग के आदर्श युवक का कितना सुन्दर चरित्र प्रस्तुत किया है जो प्रत्येक मानव के लिए सर्वदा अनुकरणीय एवं उपादेय है। भारत के लोग भगवान राम की स्मृति में विजयदशमी के शुभ अवसर पर बहुत धनराशि व्यय करके राम लीला का आयोजन करते हैं किन्तु किसी भी गुणानुरागी सहृदय सज्जन ने उस महापुरूष के एक भी गुण का अनुकरण नहीं किया। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से नवरात्रों का आरम्भ होता है, इन दिनों में भी प्राय: नगर-नगर तथा ग्रामों में तुलसीकृत रामायण का अखण्ड पाठ किया जाता है। यह सब कीर्तन व पाठ केवल बाहरी आडम्बर है। राम की एक और अन्य विशेषता यह भी है जिस प्रकार सूर्य उदय एवं अस्त के समय एक ही वर्ण का रहता है उसे कोई हर्ष, दु:ख अथवा उद्वेग नहीं होता, उसी प्रकार महापुरूष भी दुख में सुख में समान रहते हैं।

भारतीय आदर्शों का पूर्ण परिपाक हमें मर्यादा पुरूपोत्तम राम में देखने को मिलता है। मानव जीवन को सम्पूर्ण एवं सर्वांगीण बनाने में जिन गुणों की आवश्यकता होती है, वे सभी गुण हमें राम के जीवन में दिखाई देते हैं। वस्तुत: श्री राम ने अपने गुण, कर्म एवं स्वभाव से मानव की परिपूर्ण छवि हमारे सामने प्रस्तुत की है। प्रजा की प्रसन्नता के लिए वे बड़े से बड़ा त्याग करने को भी तैयार रहते थे। अन्याय और अत्याचार का प्रतिकार करने के लिए वे सदा आगे रहते थे। अत्यन्त सौम्य और मृदु स्वभाव वाले राम अवसर आने पर अत्यन्त कठोर भी बन जाते हैं। उत्तररामचरित के रचयिता भवभूति के शब्दों में-

वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि

वज्र से भी कठोर तथा पुष्प से भी कोमल राम का लोकोत्तर चरित्र समझना सामान्य बुद्धि के व्यक्ति के लिए सम्भव ही नहीं है। जीवन के आरम्भिक काल में हम उन्हें माता-पिता, गुरू आदि पूजनीय व्यक्तियों की आज्ञा पालन में तत्पर देखते हैं। कर्त्तव्य पालन में उनकी तुलना किसी अन्य से नहीं की जा सकती। जनकपुरी में शिव धनुष भंग के समय उनकी शक्तिमत्ता, धैर्य, गाम्भीर्य का परिचय मिलता है। माता-पिता की आज्ञा का पालन उन्हें अत्यन्त प्रिय था। इसलिए वे राज्याभिषेक के आनन्दजन्य अवसर को छोड़ कर वनवास के लिए प्रस्थान करते हैं। राज्यारोहण के लिए बुलाए जाने और थोड़ी देर के बाद वनवास का आदेश मिलने पर भी राम की मुखाकृति में थोड़ा भी विकार नहीं आया। सुख-दुख, हानि-लाभ तथा निन्दा स्तुति में समत्व बुद्धि रखने वाले ऐसे महापुरूषों को ही स्थितप्रज्ञ कहा जाता है। भारतीय परिवार के आदर्शों को रामायण के पात्रों में जीवन्त रूप से देखा जा सकता है। यहां भी राम ही अन्य पात्रों में आदर्श मर्यादा तथा कर्त्तव्य पालन का भाव जागृत करने में दत्तचित्त दिखाई देते हैं। अपने भाईयों के लिए उनका स्नेह और वात्सल्य समय-समय पर प्रकट होता है। सीता के प्रति उनका अनन्य प्रेम और अनुराग एक आदर्श पति की मर्यादा स्थापित कर एक पत्नीव्रत की गरिमा प्रतिष्ठित करता है। इसी प्रकार गुरू-शिष्य सम्बन्ध, स्वामी सेवक सम्बन्ध, मित्रों का पारस्परिक सौहार्द भाव, यहां तक कि शत्रु के प्रति भी न्यायपूर्ण आचरण का दृष्टान्त राम के चरित्र में दृष्टिगोचर होता है। महर्षि बाल्मीकि ने राम के इसी सर्वगुणान्वित चरित्र को ध्यान में रखकर उन्हें धर्म का विग्रहवान् रूप कहा है।

रामनवमी का त्यौहार मर्यादापुरूषोत्तम श्रीराम के गुणों को अपने जीवन में अपनाने का त्यौहार है। श्री राम एक आदर्श पुत्र थे, एक आदर्श भाई थे, एक आदर्श पति थे, आदर्श शिष्य थे। ऐसे ओजस्वी, तेजस्वी, चरित्रनायक श्री राम का जन्मदिवस मनाते हुए हम भी उनकी तरह आदर्श गुणों को अपने जीवन के अन्दर धारण करें।

-प्रेम भारद्वाज संपादक एवं सभा महामन्त्री

ऋषिबोधोत्सव एवं जन्मोत्सव

आर्य महिला सभा की अध्यक्षा (माता जगदीश आर्य) जी के तत्वाधान में ऋषिबोधोत्सव और जन्मोत्सव 8 मार्च दिन रविवार को चॉक लक्ष्मणसर बगीची खुशी राम में बड़ी श्रद्धा के साथ मनाया गया। जिसमें सैकड़ों की संख्या में भाई बहनों ने बढ़चढ़ कर भाग लिया। मुख्य वक्ता स्वामी ब्रह्मवेश जी ने स्वामी दयानन्द जी के नारी जाति पर उपकारों का वर्णन किया। मुख्य भजन गायक श्री सुरिन्द्र सिंह जी गुलशन ने अपने भजनों द्वारा श्रोताओं को मंत्र मुग्ध कर दिया। इस कार्यक्रम में विभिन्न आर्य समाजों केन्द्रीय सभा शक्ति नगर, पुतलीधर, लारेंस रोड, मॉडल टाऊन, नवांकोट लक्ष्मणसर, हरीपुरा, गन्डासिंह वाले और लक्ष्मणसर इलाका निवासियों ने बढ़चढ़ कर भाग लिया। बेटी साक्षी के भजन हुए। ज्योति प्रज्जवलित श्री सागर जी, सुरजीत जी, इन्द्रजीत, अशोक मेहता, मुकेश जी, प्रवीण जी, अरुण और विनोद मदान, रमेश आदि ने की। कार्यक्रम में 15000 रमदास 15000, 5000 राजधर्म बरनाला, 5000 नवांकोट आदि समाजों को दिया। बाकी 85000 की राशि जरूरतमंदों को लड़कियों की शादी के लिये 7 सिलाई मशीनें और 25 राशन, गरीब परिवारों में बांटी गई। अन्त में माता जी ने सबका धन्यवाद किया और ऋषि लंगर भी बाँटा गया।

-वन्दना आर्य

thearyasamaj.org

आओ ! सत्संग में चलें

-ले० श्री भद्रसेन जी शालीमार बाग होशियारपुर

कोई मानव शिशु जब संसार में आता है, तो वह सर्वथा अशक्त होता है। वह श्वास लेते हुए भी स्वयं उस का अनुभव नहीं करता है। आंखों से देखते और कानों से सुनते हुए भी कोई विशेष प्रतिक्रिया अभिव्यक्त नहीं करता है। केवल देखता-सुनता मात्र ही है। बार-बार इन क्रियाओं के करने पर कुछ-कुछ अनुभव करने लगता है। जैसे-जैसे बोलने में समर्थ होता है, वह अपनी प्रतिक्रिया प्रकट करने लगता है। जैसे-जैसे अनुभूति बढ़ती है और शिक्षा लेने लगता है। वैसे-वैसे वह सोचने-समझने में सक्षम होता जाता है। तब वह अनुकूलता-प्रतिकूलता, उचित-अनुचित और अपना हित-अहित भी दर्शाने लगता है। तभी वह इच्छा होने पर कुछ सोचने में समर्थ होता है। इस प्रकार प्रत्येक स्व-विवेक की स्थिति में देर-सवेर से पहुंच जाता है। अत: आईए! अब प्रस्तुत प्रसंग पर कुछ 'गहरे पानी पैठें'।

आप सब इस अवसर पर जिस प्रकार हुम-हुमाकर बड़ी भारी आस्था, विश्वास, श्रद्धा, भावना के साथ आए हैं। इस के लिए आप सभी का उत्साह भरे हृदय के साथ स्वागत-अभिनन्दन करता हूं। हम सब आओ। मिलकर सोचें, कि यह सब हम कब-कैसे करने में समर्थ हुए। हम में से प्रत्येक यहां आने और सत्संग करने में अच्छी प्रकार से तभी सफल होता है। जब वह स्वस्थ होता है, तभी हर एक यहां आने, सत्संग में बैठने-सुनने-समझने में सफल होता है। प्रत्येक का अपना-अपना यह अनुभव है, कि किसी का आरोग्य उस के जीने के ढंग, उपायों पर निर्भर होता है। जैसे कि कोई कब उठता है, कैसे शरीर की शुद्धि करता है ? अपने-अपने कारोबार पर जाने के लिए कोई कैसे तैयार होता है ? नाश्ता या भोजन के रूप में कैसा आहार लेता है ? इस प्रकार अपनी अच्छी दिनचर्यों से हर एक स्वस्थ रहता है। केवल विशेषज्ञ ही नहीं, अपितु एक सामान्य समझदार भी यह समझता है, कि उस की सेहत में सफाई-स्वच्छता-पवित्रता का एक बहुत बड़ा योगदान होता है। हां, यहां पवित्रता की बात जब आती है, तो उस का भाव- 'शौचं पञ्चविधं स्मृतम्' अर्थात् शरीर-मन-बोल-पारस्परिक सम्बन्ध-आजीविका आदि इस में जहां आते हैं, वहां हमारे घर, गलियां, नगर, वस्त्र, वर्तने की वस्तुएं आदि भी इसी में गिननी चाहियें। अन्यथा किसी प्रकार की गन्दगी से अन्य अंग भी विकलांगवत अधूरे दुखदायक हो सकते हैं, बन जाते हैं।

किसी के स्वास्थ्य के लिए सफाई की तरह हर प्रकार के नशे से मुक्ति भी बहुत ज्यादा सहायक होती है। जैसे कि हमारे सत्संग के जिस किसी हिस्से में यदि कोई सिगरेट पीने लग जाए, तो इस से केवल तम्बाकू पीने वाला ही नहीं, अपितु आस-पास वाले भी अस्त-व्यस्त (डिस्टर्ब) हो जाते हैं। यह नशे के पैकट पर लिखे शब्द जहां संकेत करते हैं, वहां सभी पैथियों के डाक्टर इस के गवाह हैं। हमारे चारों ओर तड़पते भयानक रोग वाले रोगियों की दशा भी यही बता रही है। अर्थात् हमारे रोगों के बढ़ने में नशों का एक बड़ा हाथ है। इस के साथ यह भी आज स्पष्ट है, कि नशा करने पर ही अधिकतर दुर्घटनायें होती हैं और नशा कर के या नशा करा कर ही अधिकतम हर प्रकार के जघन्य से जघन्य अपराध किए तथा कराये जाते हैं।

हां, अपने पक्के भक्तों, मानने वालों का विशेष अभिनन्दन है, कि वे सारे के सारे पूरी तरह से नशा मुक्त और शाकाहारी रह कर, जीवन जी कर स्वयं तथा संगठन को गौरव प्रदान करा रहे हैं। इस प्रकार अपने साधकपन को भी सफल बना रहे हैं।

आप सब यह हर बार यहां अनुभव करते हैं, कि जितनी शान्ति से आप सत्संग सुनते हैं। उतना ही सुनने-समझने में आनन्द, सन्तोष आता है। हां, यह शान्ति शब्द अपने आप में विशेष-विस्तृत अर्थ रखता है। इसीलिए इसके लिए हम अमन-चैन, धैर्य-ध्यान, चुपचाप हैप्पीली, डीपली, पिन ड्राप साईलेंस जैसे शब्दों को प्राय: बर्तते हैं। अर्थात् यह अनुशासन को पालने, अपने-आप सब कुछ मानने की भावना को दर्शाता है। जैसे कि यहां धर्मस्थल पर रहते हुए आपस में मिल-जुल कर रहते हैं। बिना औखे हुए एक-दूसरे से बोलते-चालते हैं। कोई किसी से किसी प्रकार की हेरा-फेरी करने का भी यत्न नहीं करता है। इतने से ही यहां का वातावरण हमें अच्छा लगता है। इससे सभी को सन्तोष, सन्तुष्टि, शान्ति मिलती है। ऐसे ही रोज का जीवन, और दिनों का व्यवहार जहां-कहीं भी जीते हैं। वह भी यहां सत्संग स्थल की तरह शान्तिदायक प्यार भरा लग सकता है।

सत्संगी बन्धुओ! अभी तक हमने जो बातें की हैं, चर्चा चलाई है। वह सारी अपने आपे की प्राथमिक, शारीरिक नाम वाली ही चर्चा है। इसी को समझाते हुए गीता कार ने कहा है—

युक्ताहारविहारस्य युक्तचेष्टस्य कर्मसु।

युक्तस्वप्नावबोधस्य योगो भवति दु:खहा ॥6,17॥

जिस का खान-पान, रहन-सहन (भोग), रोजमर्रा का कारोबार और सोना-जागना युक्त = उपयुक्त, व्यवस्थित, मर्यादित, सुनिश्चित, सुरक्षित, संयमित, नियमित है। उसी का ही जीवन योग दुखरहित, सफल, सुखद होता है। ये किस के लिए कितने युक्त हैं, इस का निर्णय व्यक्ति-व्यक्ति की आयु-योग्यता-अनुकूलता-प्रतिकूलता पर निर्भर है। इस का ज्ञान प्रतिदिन के अनुभव से हो जाता है।

वस्तुत: अपना-आपा तो शरीर-इन्द्रिय-अन्त:करण और आत्मा के मेल का नाम है। इस को समझाते हुए ही उदाहरण दिया जाता है। यथा + टयूब – पंखा या मशीन आदि 2-बटन और 3-बिजली इन तीनों का ताल-मेल या इस को इन का समन्वय कहो या सन्तुलन। जैसे कि हम सत्संग के प्रवचन को कानों से सुनते हैं और फिर अपने गुरु जी की भावनाओं को अन्दर की सोच से समझते हैं। जब कभी अकस्मात अपनी आत्मा की आस्था हमें जगाती है। अनोखे-अनोखे ढंग से चेताती है। जैसे कि- 'हीरा जन्म' हमें तुझे जो मिला है, वह गंवाने के काबिल नहीं है। अत: इन सब की प्रगति, समुन्नति से ही अपना आपा पूर्णत: सफल, सक्षम होता है।

हां, सभी सत्संगी यहां सत्संग में जिस बड़ी चाहना से आते हैं। वह उन की शान्ति, सुख, सन्तुष्टि, अमन-चैन, आनन्द की अनुभूति ही है। यह हम सब चाहने वाले जानते हैं, कि जब सत्संग में प्रभु भजन की, नाम स्मरण की, प्यारे प्रभु के स्वरूप की चर्चा होती है, चलती है। तब हमें एक ठण्डक, चैन, सन्तोष मिलता है। क्योंकि वह परम पिता परमात्मा ही सब का सब से बड़ा हित चिन्तक, प्रियतम है। वह ही केवल और केवल आनन्दधाम है। हर समय हर क्षण मेरे-आप के भले के लिए सारे संसार को सजाने वाला सब का सर्जक सब कुछ कर रहा है। तभी तो स्वच्छ वायु तथा वातावरण में और अनुकूल जल पीकर कितनी गहरी नींद की तरह शान्ति, सन्तुष्टि, आनन्द की अनुभूति होती है।

thearyasamaj.org

ईश्वर दर्शनों का विषय है

-ले० इन्द्रजित् देव-यूना भट्टियां यमुनानगर

स्वामी रामतीर्थ जी जब अमरीका में गये थे तो वहाँ उनके प्रवचनों को सुनकर एक दिन श्रोताओं में से एक श्रोता ने भरी सभा में खड़े होकर प्रश्न किये-

"Is your God a Mister ?" अर्थात् जिस ईश्वर की चर्चा आप करते हैं क्या वह पुरुष है ?

"No, our God is not a Mister" अर्थात् ईश्वर पुरुष नहीं है।

"Is your God is Misses ?" अर्थात् क्या ईश्वर एक (विवाहिता) स्त्री है ?

"Our God is not a Misses". अर्थात् ईश्वर (विवाहिता) स्त्री नहीं है।

"Is your God a Miss ?" अर्थात् क्या वह ईश्वर कन्या है ?

"No, our God is not a Miss" अर्थात् वह ईश्वर कन्या भी नहीं है।

"Your God is not a Mister, not misses and not a Miss, then what is your God ?" अर्थात् जिस ईश्वर की आप व्याख्यानों में चर्चा करते हैं, वह न तो पुरुष है, न स्त्री है तथा न ही वह कन्या है, वह यदि है तो क्या है ?

"Our God is a Mystery" जिस ईश्वर की मैं चर्चा करता हूँ, वह एक रहस्य है।

सचमुच ईश्वर एक गहरा रहस्य है। इसी कारण उसे समझने, जानने व मानने में गहरा पुरुषार्थ अपेक्षित है। यह अपेक्षित पुरुषार्थ न करने के कारण संसार में ईश्वर के अस्तित्व के प्रति अनास्था तथा उसके गुणों व कार्यों के प्रति अनभिज्ञता व्याप्त है। ऐसे लोगों को नास्तिक कहते हैं तथा जो स्वयं को आस्तिक घोषित करते हैं, वे लोग ईश्वर की व्यवस्था को गहरे व सच्चे मन से नहीं समझते। वे ईश्वर के अस्तिव को स्वीकार करने के बावजूद ईश्वर के अस्तित्व को सिद्ध नहीं कर पाते। ऐसे लोग अन्ध विश्वासी कहलाते हैं। नास्तिकों व अन्ध विश्वासियों की सेवा में एतद्द्वारा हम ईश्वर के अस्तित्व विषयक कुछ तर्क, प्रमाण व युक्तियां प्रस्तुत करके उसकी रहस्यात्मकता से पर्दा हटाने का नन्हा-सा विनम्र प्रयास करते हैं।

सृष्टि के आरम्भ से ही ईश्वर एक पहेली अथवा रहस्य बना रहा है, जिसे समझने में बड़े-बड़े ऋषि, मुनि, योगी व विचारक अपना शक्ति भरा प्रयास करते आए हैं। वह पहेली या रहस्य इसलिए बना रहा है व बना रहेगा क्योंकि वह पञ्चभौतिक सत्ता नहीं है, शरीरगत इन्द्रियों का विषय नहीं है। अत्यन्त सूक्ष्म व सर्वव्यापक होने से कोई भौतिक साधन उसे प्रत्यक्ष नहीं करा सकता। आज विज्ञान नित्यप्रति उन्नति कर रहा है तथा नये-नये आविष्कार वैज्ञानिक कर रहे हैं, जो दृश्यमान व भौतिक ही हैं तथा आज के वैज्ञानिक भौतिक पदार्थों के ही कुछ रहस्यों को उजागर कर रहे हैं क्योंकि वैज्ञानिक भौतिकता तक ही सीमित हैं। अत: वे घोषणा करते हैं कि ईश्वर है ही नहीं क्योंकि वह प्रयोगशाला में सिद्ध ही नहीं होता। हमारे विचार में वैज्ञानिकों को ईश्वर के विषय में निर्णय देने का अधिकार नहीं है। उनसे पूछा ही जाना नहीं चाहिए। ईश्वर सम्बन्धी उनकी मान्यताएं व घोषणाएं अमान्य हैं। यह विषय दार्शनिकों का है तथा उन्हीं से पूछा जाना चाहिए। उन्हें ही इस विषय में कुछ कहने का अधिकार है। दर्शनों को न जानने से सत्य ज्ञान हो नहीं सकता।

कोश के अनुसार 'दृश' धातु का अथ केवल नेत्रों से ही देखना नहीं होता, अपितु मन से देखना, सीखना, समझना, जानना निश्चय करना व खोजना आदि हैं। अन्तर्ज्ञान की दृष्टि से देखना ही दर्शन है। वह ग्रन्थ जिसके द्वारा किसी वस्तु के स्वरूप का पता चलता है। 'दृश्यते अनेन इति दर्शनम' अर्थात् वह ग्रन्थ जो जीवन को, पदार्थों को यथार्थ रूप में देखने समझने हेतु वास्तविक दृष्टि प्रदान करता है-उसे दर्शन कहते हैं।

वह ईश्वर सर्वव्यापक है, मेरे अत्यन्त निकट है। मैं दर्शन कर ही नहीं सकता। उसके दर्शन करने हैं तो मुझे पहले अपने भीतर देखना होगा, जानना होगा-

है देखने का शौक तो आंखों को बन्द कर,

है देखना यही कि न दीखा करे कोई।

अर्थात् आत्मा को जो शरीर मिला है, इन्द्रियां उसके भौतिक कार्य करने के साधन रूप में हैं और ये इन्द्रियां बनती ही ऐसी हैं कि वे बाहर जाती हैं, बाहर ही कार्य करती हैं :-

परांचि खानि व्यतृणत् स्वयंभूः तस्मात्पराङ् पश्यति नान्तंरात्मन:। - कठोपनिषद् चतुर्थी वल्ली

नेत्र शरीर के बाह्य सभी अंगों को देख नहीं पाते। जब बाह्य अंगों का यह हाल है तो शरीर के आन्तरिक रूप को, जो साकार स्थूल व दृश्यमान् है, उसे देख पाने का प्रश्न ही नहीं उठता। आत्मा व ईश्वर को कैसे देख पाएंगे, जो निराकार, सूक्ष्म व अदृश्यमान् हैं। नेत्र आत्मा-परमात्मा को देखने के लिए बने ही नहीं हैं। हम समझते हैं कि नेत्र देखते हैं, कान सुनते हैं, वाणी बोलती है, परन्तु सत्य यह नहीं है। नेत्र रहते हुए भी नेत्र नहीं देख सकते, कान रहते भी कान नहीं सुन पाते, वाणी रहते भी वाणी नहीं बोलती- इनमें विद्यमान कोई अन्य शक्ति विशेष है, जो इनको शक्ति देती है। वह शक्ति न हो तो ये अंग रहते हुए भी कुछ नहीं कर सकते। यह शक्ति, यह व्यवस्था ईश्वर की है। उसके विषय में कहा गया है-

हर जगह मौजूद है पर वह नज़र आता नहीं।

योग-साधन के बिना कोई उसको पाता नहीं॥

यदि ईश्वर को देख करके ही कोई ईश्वर के होने पर विश्वास करना चाहता है तो हमारा निवेदन है कि वह सृष्टि के कण-कण में व्याप्त है, अणु-अणु में उसका वास है। वह व्यक्ति विशेष न होकर शक्ति विशेष है। वह दीखता है परन्तु कैसे? किसी वस्तु के न दीखने के 2 कारण हो सकते हैं। एक कारण यह कि वह वस्तु अत्यन्त निकट हो। जैसे नेत्रों से मैं अपने नेत्रों को नहीं देख सकता। दूसरा कारण यह हो सकता है कि वस्तु बहुत दूर हो- जहां तक देखने की शक्ति ही नेत्रों में न हो। जैसे हिमालय की सब से ऊँची चोटी-गौरी शंकर की चोटी (माऊँट एवरैस्ट) परन्तु हमें यह भी स्मरण रखना चाहिए कि ये दोनों नियम साकार व भौतिक पदार्थों को देखने (दर्शन करने) की इच्छा पर लागू होते हैं। सूक्ष्म, निराकार व चेतन पदार्थों को उनकी क्रियाओं से हम उन्हें देख व जान सकते हैं। यह अनुभव व बुद्धि का विषय है-

उसकी हस्ती पै मुझको यकीं भी नहीं,

मेरे होठों पै मगर नहीं भी नहीं।

बुद्धि से सोचता हूँ तो मौजूद है हर जगह,

आँखों से देखता हूँ तो वह कहीं भी नहीं।

ब्रैडला (Bradlaugh) इंग्लैंड का उन्नीसवीं शती का एक प्रसिद्ध नास्तिक दार्शनिक हुआ है। अनीश्वरवाद का उसने भरपूर प्रचार किया। लाहौर (वर्तमान पाकिस्तान) में उसके नाम पर एक भवन ब्रैडला हाउस भी स्थापित हुआ था। इससे सिद्ध है कि उसके विचार भारत तक भी पहुँचे थे। वह कहा करता था कि यदि मनुष्य के शरीर में आत्मा मानोगे तो कुत्ते में भी आत्मा को मानना पड़ेगा। ईश्वर के अतिरिक्त वह जीवात्मा के अस्तित्व को भी नकारता था परन्तु जब वह मरने लगा तो उसे अनुभव होने लगा कि कोई अज्ञात-अदृश्य शक्ति है अवश्य जो मुझे शरीर से निकलने पर बाधित कर रही है। मृत्यु सबकी होती है परन्तु यह शिक्षिका भी बन जाती है, किसी विशेष विचारवान् व्यक्ति के लिए ब्रैडला अन्त में यह आस्तिक मानकर हो गया क्योंकि जिन पांच तत्वों से बना शरीर है, ये सभी जड़ हैं। इनमें से किसी एक में भी यह शक्ति नहीं है कि मुझे शरीर से निकाल सके। मैं शरीर का त्याग करना नहीं चाहता। फिर क्यों शरीर छोड़ना पड़ रहा है मुझे ? कोई तो सत्ता है जो विवश कर रही है कि इस देह से निकलो। कोई कार्य स्वत: नहीं होता। प्रत्येक कार्य के लिए कर्त्ता का होना अनिवार्य है। अत: कार्यों को देखकर जानकर हम कर्त्ता को जान सकते हैं। नवजात शिशु को देखकर नास्तिक यह कहते हैं कि मनुष्य के अंग ऐसे अपने-आप होते हैं। वह यह सोचने-जानने का कष्ट नहीं करते कि इस में सुव्यवस्था है व सुव्यवस्थापक बिना सुव्यवस्था हो ही नहीं सकती। गर्भाधान के समय किसी भी प्राणी की आकृति नहीं होती। बाद में सभी अंग व आकृति कौन प्रदान करता है ? कौन फिट करता है ? जहाँ नाक होनी चाहिए, वहीं सब की नाक होती है। जहाँ कान होने चाहिए, वहीं ये स्थापित होते हैं। यह अङ्गारोपन कौन करता है ? (शेष पृष्ठ 6 पर)

thearyasamaj.org

पृष्ठ 5 का शेष-ईश्वर दर्शनों का.....

माता अथवा पिता को तो यह भी पता नहीं चलता कि गर्भ में पुत्र है अथवा पुत्री। वे गर्भस्थ सन्तान को अङ्ग-प्रत्यङ्ग कैसे दे सकते हैं? इस समय संसार के मनुष्यों की संख्या सात अरब हो गई है। जितने मनुष्य हैं, उतनी ही भिन्न-भिन्न आकृतियाँ किस ने बनाई व क्यों बनाई ? सब मनुष्यों की आवाज़ एक जैसी क्यों नहीं ? किस ने ऐसा किया ? एक ही नाम के दो व्यक्तियों के हस्ताक्षर क्यों नहीं मिलते ? दो सगे भाइयों के हाथों की लकीरें (Finger Prints) भी नहीं मिलती तो क्यों नहीं मिलती व किसने यह विभिन्नता रखी है ? यदि तनिक भी इन प्रश्नों पर विचार किया जाए तो यही निष्कर्ष निकलता है कि कोई ऐसी शक्ति अवश्य है जिसे इस बात की चिन्ता थी व है कि संसार में सुव्यवस्था रहे व अफ़रा-तफ़री न फैल जाए। विस्तारभय से इन प्रश्नों के उत्तर में इतना ही निवेदन करना हम पर्याप्त समझते हैं।

मनुष्य का जन्म भी उसकी इच्छा से नहीं होता। वह अपनी प्रसन्नता से संसार में नहीं आता। यदि हम अपनी प्रसन्नता से आए होते तो हम संसार के शीर्ष धनवान् या विद्वान् के यहाँ ही उत्पन्न हुए होते क्योंकि एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं मिलेगा जो मध्यम या निम्न वित्तीय परिवारों के यहाँ जन्म लेना चाहता हो तथा न ही कम पढ़े-लिखे या अपढ़ माता-पिता की सन्तान कोई व्यक्ति बनना चाहता है। दूसरी ओर किसी माता-पिता को भी अधिकार नहीं मिलता कि वे अपनी मन पसन्द आत्मा को प्राप्त करके अपने यहाँ जीवन प्रदान करके प्रसन्नता व सुखपूर्वक निर्वाह कर सकें।

न अपनी खुशी से यहाँ लोग आए।

मगर सबने आकर यहाँ दिन बिताए॥

कौन निर्णय व व्यवस्था करता है- इन सम्बन्धों का ? ऐसा निर्णय करने की क्षमता व अधिकार किसी जीव में तो है नहीं। कोई पक्षपातहीन, न्यायकारी व सर्वज्ञ शक्ति ही ऐसा निर्णय कर सकती है। वह शक्ति अति सूक्ष्म है। इन्द्रियों के द्वारा उसका ग्रहण किया ही नहीं जा सकता था इन्द्रियों के द्वारा उसकी अनुपलब्धि उसके अभाव का साधक नहीं मानी जा सकती। पुनरपि योगियों को अबाह्य (आन्तरिक) प्रत्यक्ष से तो वह उपलब्ध, प्रत्यक्ष या प्रतीत होती ही है-

सौक्ष्म्यात्तदनुपलब्धिः।

- सांख्य दर्शन १/७५

सूक्ष्म की उपलब्धि उसके कार्य देखने से होती है तथा उसकी प्रतीति, ज्ञान तथा अनुभव हो जाने के पश्चात् उसका अभाव नहीं कहा जा सकता-

कार्यदर्शनात् तदुपलब्धेः।

- सांख्य दर्शन १/७५

महान् आधुनिक वैज्ञानिक न्यूटन के अभिप्रेरणा नियम (Law of motion) के साथ संसार की व्यवस्था को समझने की प्रक्रिया हमें अपनानी चाहिए, तब ईश्वर समझ में अधिक आएगा-

"A body in a state of rest on of motion will continue in its state of rest or of motion untill an external force is applied.

अर्थात् कोई भी स्थिर पदार्थ तब तक अपनी स्थिर अवस्था में ही रहेगा जब तक किसी बाह्य-बल से उसे गति न दी जाए और वह पदार्थ तब तक अपनी गतिशील अवस्था में ही रहेगा, जब तक उसे किसी बाह्यबल से रोका न जाए। इसका तात्पर्य यह हुआ कि किसी शक्ति की पहचान कार्यों से, गति से, क्रियाओं से होती है। यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड भी एक विस्तृत पदार्थ है, Body है। इसमें गति को देखिए, जानिए व पहचानिए। आपको एक शक्ति का आभास होगा। सूर्य गति कर रहा है, पृथिवी भी गति कर रही है। नदियां गति कर रही हैं। पुष्प उगते हैं, उनमें सुगन्धि कौन भर रहा है ? ये काम कोई मनुष्य नहीं कर रहा, न ही मनुष्य ऐसा कर सकता है। फिर कौन कर रहा है ? वह ईश्वर ही है। बिना देखे उसके अस्तित्व पर विश्वास तुम नहीं करते तो बताओ-"क्या अपने-आप को कभी देखा है ?"

"नहीं"।

"तुम एक आत्मा हो व शरीर में हो रही विभिन्न क्रियाओं को देखकर-जानकर ही तुम व तुम्हें जानने वाले सभी व्यक्ति यह विश्वास किए रहते हो कि तुम हो। क्या इस तथ्य से सहमत हो?"

"हां, मैं सहमत हूँ।"

"अभी तुम बोल रहे हो, देख रहे हो, सांस आ-जा रहा है। यदि अभी ये क्रियाएँ बन्द हो जाएं तो तुम्हारा पुत्र ही कहेगा कि मेरे पिता जी नहीं रहे। अभी तुम्हारा शव घर में रखा है जो पहले दिखाई देता था। वह अब भी दिखाई दे रहा है परन्तु सब कह रहे हैं कि तुम नहीं रहे। शरीर, जिसका अन्त्येष्टि कर्म अभी नहीं किया गया, उसकी विद्यमानता में भी लोग क्यों नहीं मान रहे कि तुम अब भी हो ? इसी शरीर को तो पहले भी देखते थे तो कहते थे कि तुम हो। अब इसे देखकर क्यों नहीं मानते ?"

"आप ही समझाइएगा"

"यह शरीर साधन है, निराकार आत्मा का इस की क्रियाशीलता अपनी नहीं है। आत्मा की है। आत्मा के बिना शरीर निष्क्रिय व व्यर्थ है। मुख्य वस्तु तो आत्मा ही है। यदि बिना देखे आत्मा को मानते हो तो बिना ईश्वर को देखे क्यों नहीं मानते कि ईश्वर भी है ?"

"जो क्रियाएं आप ईश्वर की बता रहे हैं, वे उन पदार्थों की उत्पत्ति की स्वाभाविक क्रियाएं हैं, न कि ईश्वर की हैं।"

"महर्षि दयानन्द जी ने लिखा है कि जो स्वभाव से जगत् की उत्पत्ति होवे तो विनाश कभी न होवे और विनाश भी स्वभाव से मानो तो उत्पत्ति कभी न होगी और जो दोनों स्वभाव युगपत् द्रव्यों में मानों तो उत्पत्ति व विनाश की व्यवस्था कभी न हो सकेगी। यदि स्वभाव से ही उत्पन्न होता है तो इस भूगोल के निकट में दूसरा भूगोल, चन्द्र, सूर्य आदि उत्पन्न क्यों नहीं होते और जिस-जिस के योग से जो-जो उत्पन्न होता है, वह-वह ईश्वर से उत्पन्न किए हुए बीज, अन्न, जल आदि के संयोग से घास, वृक्ष और कृमि आदि उत्पन्न होते हैं, बिना उसके नहीं। जैसे हल्दी, चूना और नीबूं का इस दूर-दूर देश से आकर स्वयं नहीं मिलते। किसी के मिलाने से ही मिलते हैं। उसमें भी यथायोग्य मिलाने से 'रोरी' होती है। अधिक-न्यून अन्यथा करने से रोरी नहीं होती, वैसे ही प्रकृति परमाणुओं का ज्ञान और युक्ति से परमेश्वर के मिलाये बिना जड़ पदार्थ स्वयं कुछ भी कार्य सिद्धि के लिए विशेष पदार्थ नहीं बन सकते। इसलिए स्वभाव से सृष्टि नहीं होती (न चलती है) परमेश्वर की रचना से ही होती (व चलती) है।

-सत्यार्थ प्रकाश, ८वां समु.

हमारा एक प्रश्न है उनसे, जो कहते है कि स्वभाव है पदार्थों का मिलना, कि लोहे से बने कुछ टुकड़े अपने-आप उठकर परस्पर मिल जाने चाहिए थे तथा रेल के पहिए बन जाने चाहिए इन्हें उठाकर कारखाने में ले जाना पड़ता है तथा एक मिस्त्री अपनी बुद्धि, अपने हाथ तथा अन्य भौतिक साधनों का प्रयोग करके ही पहिया बनाएगा। इससे सिद्ध होता है कि पदार्थों में अपनी कोई व्यवस्था नहीं होती, बुद्धि भी नहीं है तथा न ही गति है। इनके बिना स्वभाव बन जाना असम्भव है।

ईश्वर के अस्तित्व विषयक कुछ भ्रान्तियों का निराकरण करने के पश्चात् हम प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि वह सब को सद्बुद्धि दे ताकि सब लोग उसको सही रूप में जानें व उसकी कृपा से पूर्णतः लाभान्वित हो सकें।

नववर्ष 2072 एवं आर्य समाज स्थापना दिवस धूमधाम से मनाया गया

वैदिक नववर्ष जो कि 21 मार्च को आरम्भ होता है। आर्य समाज बठिण्डा ने इसे 22 मार्च दिन रविवार को बड़ी धूमधाम से मनाया। पहले हवन किया फिर श्री पी. डी. गोयल एडवोकेट ने इस दिन के इतिहास एवं महत्त्व के बारे में बताया। इस कार्यक्रम के मुख्य वक्ता स्वामी सूर्यदेव जी महाराज थे। जिन्होंने विक्रमी कैलेन्डर के बारे में तकरीबन आधा घंटे तक बोले। सत्संग हाल जो पूरा भरा हुआ था। सभा ने रोमांचित एवं हर्षमय महसूस किया और बहुत ही ध्यान से सुना। बाद में प्रधान श्री गौरी शंकर ने आए हुए भाई-बहनों को नव वर्ष की बधाई दी और धन्यवाद किया। शांति पाठ के बाद कार्यक्रम की समाप्ति हुई। उसके उपरान्त जलपान करवाया गया। रात्रि में भवन को बिजली की लड़ियों से सजाया गया। **-महामन्त्री**

thearyasamaj.org

परीक्षा परिणाम घोषित

दिनांक 12-03-2015 को आर्य सीनियर सैकण्डरी स्कूल लुधियाना में प्राइमरी कक्षाओं का नतीजा घोषित किया गया। इस नतीजे में Ist कक्षा से लेकर पाँचवी कक्षा के विद्यार्थियों में से Ist IInd IIIrd रहे विद्यार्थियों को ईनाम देकर सम्मानित किया गया। इस समय पर मुख्य तौर पर पहुँचे स्कूल मैंनेजमैंट कमेटी के मैंनेजर श्रीमती विनोद गाँधी जी ने बच्चों को आशीर्वाद दिया और बच्चों को ईनाम दिए और उन्होंने अपने भाषण में बच्चों के साथ-साथ बच्चों के माता-पिता को भी बच्चों के प्रति सचेत रहने के लिए कहाँ। स्कूल के प्रिंसीपल श्री विजय पाल दयोड़ा जी ने भी बच्चों को अपना आशीर्वाद दिया और उन्होंने टीचरों की अच्छी कारगुज़ारी की प्रशंसा की। इस समय पर पहुँचे स्कूल मैनेजिंग कमेटी के प्रधान श्री मुनीष मदान, वृन्दावन स्कूल के इंचारज श्रीमती अनु बाला, और मलेरकोटला हाऊस के इंचारज श्री राकेश कुमार, प्राईमरी स्कूल के इंचारज श्रीमती गुरिन्द्र कौर स्कूल की वाइस प्रिंसीपल श्रीमती सीमा गुप्ता, टीचर यूनियन और कर्मचारी यूनियन के प्रधान श्री जनक राज भगत जी शामिल हुए। **-मैनेजर श्रीमती विनोद गाँधी**

कन्या गुरुकुल की स्थापना

गुरुकुल कुरुक्षेत्र स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित 102 वर्ष पुरानी संस्था है। वर्तमान में गुरुकुल में आवासीय रूप से 1300 छात्र शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। विगत वर्षों में गुरुकुल द्वारा छात्रों की शिक्षा, संस्कार एवं स्वास्थ्य के क्षेत्र अभूतपूर्व कार्य किये गए हैं। इन उपलब्धियों के चलते इसी प्रकार का गुरुकुल बालिकाओं के लिए भी स्थापित करने की मांग निरन्तर बनी रही। आम जन की भावनाओं को ध्यान में रखते हुए कन्याओं के लिए अम्बाला में चण्डीगढ़ राजमार्ग पर चमन वाटिका इण्टरनैशनल कन्या गुरुकुल की स्थापना कर दी गई है। आधुनिकतम सुविधाओं से युक्त इस गुरुकुल में छात्राओं की शिक्षा, संस्कार, स्वास्थ्य और सुरक्षा का पूर्ण ध्यान रखा जायेगा।

-आचार्य देवव्रत प्राचार्य गुरुकुल कुरुक्षेत्र

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज नई मंडी, मुजफ्फरनगर का 87वाँ त्रिदिवसीय वार्षिकोत्सव (नवसस्येष्टि महोत्सव) 6 मार्च 2015 दिन शुक्रवार को धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ। प्रात: ५ , की ज्योति जलती रहे, ओ३म् का झण्डा ऊँचा रहे, भारत देश विश्व का सिरमौर बने, जीव मात्र का कल्याण हो, की कामना के साथ वेद मंत्रों एवं त्रिदोषनाशक सामग्री से श्री राकेश कुमार आर्य जी के पुरोहित्य में यज्ञ सम्पन्न हुआ। यज्ञ के यज्ञमान डॉ. सत्यवीर सिंह आर्य श्रीमती उर्मिला सिंह, श्री शरद कुमार श्रीमती गरिमा, श्री पकज कुमार व श्रीमती दीपा रहे। ब्रह्मापद पर सुशोभित प्रो० डॉ. धर्मवीर जी अध्यक्ष, परोपकारिणी सभा अजमेर ने अपने उद्बोधन में कहा कि महर्षि देव दयानन्द ने राष्ट्र और विश्व को वेद ज्ञान की उपयोगिता का भान कराया और बताया कि आर्यसमाज ही एकमेव मार्ग है जिससे संसार का कल्याण सम्भव है। आर्यरत्न आचार्य गुरुदत्त आर्य ने कहा कि यदि देश बचाना चाहते हो तो जातिवाद को मिटाओ। इससे समाज में ईर्ष्या, द्वेष व घृणा पैदा होकर देश की एकता व अखंडता को खतरा हो गया है। राष्ट्र के नागरिकों का कर्त्तव्य है कि अपने देश की संस्कृति व संस्कारों के अनुरूप अपना आहार व व्यवहार बनाकर सदाचरण को जीवन में धारण करें। इस सुअवसर पर श्री श्रीकृष्ण आर्य व श्री तेजपाल सिंह आर्य को आर्य समाज की ओर से सम्मानित किया गया तथा महात्मा प्रेम मुनी, स्वामी भजनानन्द सरस्वती, स्वामी सत्यवेश सरस्वती, कुँवर सुखपाल आर्य प्रभाकर व सहदेव सिंह बेधडक आदि विद्वानों के उपदेश व भजन भी हुए। श्री आर.पी. शर्मा ने कार्यक्रम का संचालन किया। जनपद व नगर की आर्य समाजों के प्रतिनिधियों, सदस्यों व आम जनता की प्रचुर संख्या में सहभागिता रही। सभी को निशु:ल्क वैदिक साहित्य प्रसादरूप में वितरित किया गया। ऋषि—लंगर से उत्सव का समापन हुआ।

-आर.पी. शर्मा मंत्री

सूचना

ज़िला आर्य सभा लुधियाना द्वारा आर्य समाज स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में रविवार 5 अप्रैल 2015 को प्रात: 9.00 से 1:00 बजे तक आर्य समाज मेन बाज़ार पायल ज़िला लुधियाना में आयोजन होगा। इसमें यज्ञ, मधुर भजन, उत्तम प्रवचन होंगे। सभी सादर आमंत्रित हैं।

विजय सरीन महामन्त्री ज़िला आर्य सभा

नोट-पायल जाने के लिए 5 अप्रैल प्रात: 7.30 बजे नि:शुल्क बस जवाहर नगर पानी की टैंकी के पास से चलेगी।

विक्रमी नव संवत् एवं आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया गया

आर्य समाज मोहल्ला गोबिन्दगढ़ जालन्धर में दिनांक 21 मार्च 2015 शनिवार को प्रात: 7.00 से 8.30 बजे तक विक्रमी नव संवत् एवं आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया गया। सर्वप्रथम हवन यज्ञ के माध्यम से विक्रमी नव संवत् के विशेष मन्त्रों के द्वारा आहुतियां डाली गईं। यज्ञ के ब्रह्मा श्री सुरेश कुमार शास्त्री जी थे। यज्ञ के पश्चात् कु. शालू शुक्ला ने सुन्दर भजन सुनाया। श्री सुरेश कुमार शास्त्री जी ने विक्रमी नव संवत् एवं आर्य समाज स्थापना दिवस के महत्त्व पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर सर्वश्री इन्द्र कुमार शर्मा, नरेश मल्हन, रवि वासुदेवा, मधु वासुदेवा, किरण वशिष्ठ, राज कुमार शर्मा, जवाहर सूद, अजय शुक्ला, शालू शुक्ला आदि उपस्थित थे। **-रवि वासुदेवा मन्त्री आर्य समाज**

संजीव शोरी नगरपालिका के प्रधान निर्वाचित

आर्य समाज के सक्रिय कार्यकर्त्ता तथा गांधी आर्य हाई स्कूल बरनाला के प्रबन्धक श्री संजीव शोरी बरनाला नगरपालिका के प्रधान निर्वाचित हुए हैं। आर्य संस्थाओं से शिक्षा ग्रहण करके आर्य संस्थाओं से जुड़े हुए हैं। बरनाला की समूह शिक्षण संस्थाओं के प्रबन्धक कमेटी सदस्य, स्टॉफ ने उन्हें बधाई दी है। गांधी आर्य हाई स्कूल की प्रबन्धक कमेटी की मीटिंग में आर्य समाज के प्रधान श्री प्रेम कुमार बांसल, महामन्त्री भारत भूषण मोदी, एल. बी. एस. कालेज महासचिव भारत भूषण मैनन, उपप्रधान श्री केवल जिन्दल, सुखमहिन्दर सन्धू, सतीश चीमा, राम कुमार सोबती तथा अन्य सदस्यों ने श्री संजीव शोरी को बधाई दी। **-राम कुमार सोबती**

शोक सभा

आर्य समाज के वयोवृद्ध नेता लाला कुलवंतराय अग्रवाल पूर्व आर्य गर्ल्ज़ सी. सै. स्कूल बठिण्डा की रस्मपगड़ी पर बठिण्डा शहर की भिन्न-भिन्न संस्थाएं एवं बहुत ही प्रतिष्ठित व्यक्ति पहुंचे। ज़िला के दूर-दूर के गांवों से भी लोग अपने श्रद्धासुमन भेंट करने के लिए आए। लाला जी का समाज और देश के प्रति बहुत बड़ा योगदान रहा। वह मार्केट कमेटी, म्युनिसिपल कमेटी व इम्प्रूवमैंट ट्रस्ट के चेयमैन रहे हैं। उच्च कोटि के राजनीतिज्ञ थे। सारा परिवार आर्य समाज से जुड़ा हुआ था। इनके बड़े भाई लाला अमरनाथ अग्रवाल पहले इसी स्कूल के प्रधान थे और उनकी सेहत खराब होने के बाद कुछ आंखों की रोशनी भी कम हो गई इसलिए लाला कुलवंत राय जी को प्रधान बनाया गया और उनकी सेहत खराब होने के बाद पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी ने इस परिवार की सेवाओं व समर्पण भाव को ध्यान में रखते हुए लाला जी के बड़े बेटे अनिल अग्रवाल को प्रधान बनाया है। इस परिवार के सदस्यों ने आर्य माडल सी. सै. स्कूल, आर्य ग्लर्ज़ सी. सैकंडरी स्कूल व गुरुकुल में कमरों का योगदान दिया हुआ है। आर्य समाज बठिण्डा इनके समर्पण भाव को सदा स्मरण रखेगा तथा ये अपने परिवार एवं दूसरे लोगों के लिए प्रेरणा स्रोत साबित होंगे। लाला कुलवंत राय ने बठिण्डा में आर्य वीर दल की स्थापना की थी। इन्हें श्रद्धांजलि देने के लिए बठिण्डा शहर के अलग-अलग हर प्रकार के राजनीतिक नेता तथा सामाजिक संस्थाओं के मुखियों के अलावा पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा से श्री रणजीत आर्य मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब विशेष तौर से पहुंचे। उन्होंने प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा की ओर से भेजा हुआ शोक संदेश भी पढ़ा। आर्य समाज के तमाम पदाधिकारी व सारे पुराने सदस्य भी पहुंचे हुए थे। रामां तथा गोनियाना के आर्य नेता भी विशेष रूप से पहुंचे हुए थे। इस मौके पर परिवार द्वारा श्री कुलवंत राय वेल्फेयर सोसाइटी गठन करने का ऐलान किया गया। जिसमें 21 लाख रुपए की राशि रखी गई और उसके दृष्टि लाला जी के दोनों बेटे अनिल अग्रवाल और अरुण अग्रवाल है। सभा ने 2 मिनट का मौन रखकर दिवंगत आत्मा का शान्ति हेतु प्रार्थना की और बाद में स्वामी सूर्यदेव जी ने लाला कुलवंत राय अमर रहे के जयघोषण के बाद शान्ति पाठ द्वारा शोक सभा की समाप्ति की।

thearyasamaj.org

स्वतंत्रता सेनानी व आर्य नेता कुलवन्त राय अग्रवाल का श्रद्धांजलि समारोह

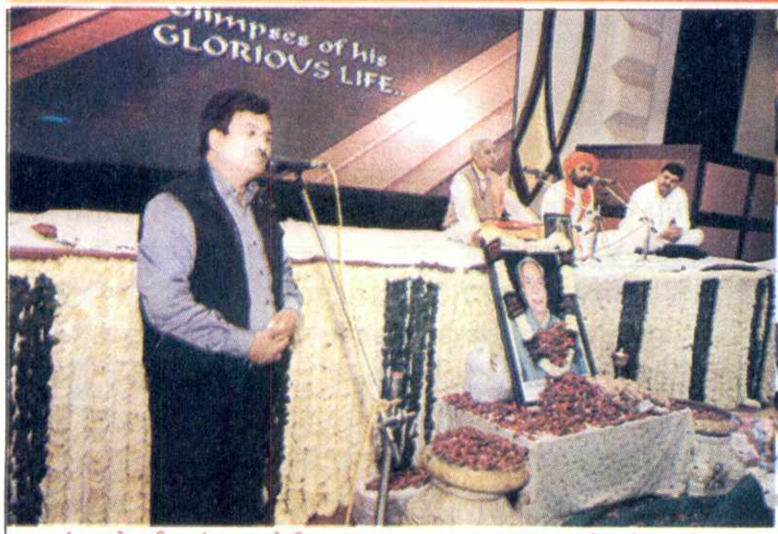

स्वतंत्रता सेनानी एवं समाजसेवी लाला कुलवन्त राय अग्रवाल की अन्तिम शोक सभा में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मंत्री श्री रणजीत आर्य उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हुऐ। वह विशेष रूप से सभा प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी का शोक संदेश लेकर गये थे। दूसरे चित्र में परिवार के साथ संवेदना व्यक्त करते हुये श्री स्वरूप चंद सिंगला संसदीय सचिव पंजाब सरकार व अन्य।

स्वतंत्रता सेनानी एवं आर्य समाज के वयोवृद्ध नेता लाला कुलवन्त राय अग्रवाल पूर्व प्रधान आर्य गर्ल्ज सी.सै.स्कूल बठिंडा की रस्म पगडी पर बठिंडा शहर की भिन्न भिन्न संस्थाओं एवं बहुत ही प्रतिष्ठित एवं गणमान्य व्यक्ति पहुंचे। जिला के दूर दूर के गांवों से भी लोग अपने श्रद्धा सुमन भेंट करने के लिये आए। लाला जी का समाज और देश के प्रति बहुत बड़ा योगदान रहा। वह मार्किट कमेटी, म्युनिसिपिल कमेटी व इम्प्रूवमैंट ट्रस्ट के चेयरमैन भी रहे। उच्चकोटि के राजनीतिज्ञ थे एवं समाजसेवी थे। सारा परिवार आर्य समाज से जुड़ा हुआ था। इनके बड़े भाई लाला अमरनाथ अग्रवाल पहले इसी स्कूल के प्रधान थे और उनका स्वास्थ्य खराब होने के बाद कुछ आंखों की रोशनी भी कम हो गई इसलिये लाला कुलवन्त राय जी को प्रधान बनाया गया और उनकी सेहत खराब होने के बाद पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी ने इस परिवार की सेवाओं व समर्पण भाव को ध्यान में रखते हुये लाला जी के बड़े बेटे अनिल अग्रवाल को आर्य गर्ल्ज सी.सै.स्कूल बठिंडा का प्रधान बनाया।

इस परिवार का योगदान आर्य समाज के प्रति हमेशा बना रहा। इस परिवार के सदस्यों ने आर्य माडल सी.सै.स्कूल एवं आर्य गर्ल्ज सी.सै.स्कूल व गुरुकुल में कमरों के निर्माण के लिये योगदन दिया। आर्य समाज बठिंडा इनके समर्पण भाव को सदा स्मरण रखेगा तथा ये अपने परिवार एवं दूसरे लोगों के लिये भी प्रेरणा साबित होंगे। लाला कुलवन्त राय जी ने बठिंडा में आर्य वीर दल की स्थापना की थी। इन्हें श्रद्धांजलि देने के लिये बठिंडा शहर के अलग अलग हर प्रकार के राजनीतिक नेता तथा सामाजिक संस्थाओं के मुखिया भी पधारे। स्वरूप चंद सिंगला संसदीस सचिव पंजाब सरकार ने कहा कि लाला जी बहुत ही नेक इंसान थे और इनका सदा ही बठिंडा निवासियों को कमी खलती रहेगी।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की तरफ से विशेष तौर पर सभा के मंत्री श्री रणजीत आर्य जी उनको श्रद्धांजलि देने के लिये पधारे। उन्होंने कहा कि स्वतंत्रता सेनानी लाला कुलवन्त राय एक आर्य समाज के स्तम्भ थे। उन्होंने पिछले चालीस वर्ष से आर्य समाज की सेवा की और 20 वर्ष तक आर्य गर्ल्ज सी.सै.स्कूल के प्रधान रहे। इनका समाज में अच्छा स्थान था। इनके चले जाने से आर्य समाज को तो क्षति हुई है उसके साथ सामाजिक क्षति भी हुई है जिसकी भरपाई करना कठिन है। उन्होंने आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी की तरफ से भेजा गया शोक संदेश भी पढ़ा। उन्हें श्रद्धांजलि देने के लिये आर्य समाज के तमाम पदाधिकारी व सारे पुराने सदस्य भी पधारे हुये थे।

रामां तथा गोनियाना के आर्य नेता भी विशेष रूप से पहुंचे हुये थे। इस मौके पर परिवार द्वारा श्री कुलवन्त राय वैल्फेयर सोसायटी के गठन करने का ऐलान किया गया। जिसमें 21 लाख रूपये की राशि रखी गई और उसके ट्रस्टी लाला कुलवन्त राय जी अग्रवाल के दोनों बेटे अनिल अग्रवाल और अरुणं अग्रवाल है। सभी पधारे हुये महानुभावों ने दो मिनट का मौन रख कर दिवंगत आत्मा की शांति हेतु विशेष प्रार्थना की और बाद में स्वामी सूर्यदेव जी ने लाला कुलवन्त राय अमर रहे के जयघोष के बाद शांति पाठ द्वारा शोक सभा की समाप्ति की।

आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया

आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर में आर्य समाज स्थापना दिवस एवं नव सम्वत 2072 बड़ी श्रद्धा व उत्साह से मनाया गया। आर्य समाज की यज्ञशाला में हवन यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य यजमान कुबेर शर्मा व नदिनी शर्मा ने बड़ी श्रद्धा से यज्ञ में आहुतियां डाली। गुरुकुल करतारपुर के ब्रह्मचारी व स्वामी धर्मानन्द जी ने यज्ञ सम्पन्न करवाया। आर्य जगत की प्रसिद्ध भजन गायिका सोनू भारती ने ईश्वर भक्ति के भजन व स्वामी दयानन्द के जीवन पर एक भजन सुनाया। अगर ऋषिवर की बातों पर जमाना चल गया होता सुना कर सब को मंत्रमुग्ध कर दिया। आर्य समाज की स्थापना दिवस पर अश्विनी डोगरा जी ने कहा कि स्वामी दयानन्द जी ने आर्य समाज की स्थापना कर लोगों को अंधेरे से उजाले की ओर ले गये और वेद ग्रंथ क्या हैं इसके बारे में महिमा सुना कर स्वामी दयानन्द जी ने सब को जगा दिया। आर्य समाज के रणजीत आर्य ने कहा कि आज के दिन नव सम्वत् को 1875 में स्वामी दयानन्द जी ने मुम्बई में आर्य समाज की स्थापना की थी उसके बाद आर्यों ने जगह जगह आर्य समाज की स्थापना की जिसमें हम आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर ने भी एक आर्य समाज 1980 में मुल्खराज आर्य जी के सहयोग से निर्माण हुआ। आर्य समाज एक क्रान्तिकारी, राष्ट्रसेवा, समाज सुधारक संस्था है।

आर्य समाज शहीद भगत सिंह कालोनी जालन्धर में आर्य समाज स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में हवन यज्ञ करते हुये सदस्य।

आर्य समाज ने हजारों क्रान्तिकारी वीर थे जिन्होंने देश की आजादी के लिये अपने आप को कुर्बान कर दिया। शहीद भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव, राम प्रसाद बिस्मिल, लाला लाजपत राय, स्वामी श्रद्धानंद, खुशी राम इत्यादि कई आर्य वीर दिये। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने हमें सत्यार्थ प्रकाश दिया। जिसमें ईश्वर का मुख्य नाम क्या है, पांच महायज्ञों का क्या महत्व है हमें बताया गया है। महिलाओं पर जो उपकार ऋषि दयानन्द जी ने किये हैं वह स्त्री जाति कभी भी भूल नहीं सकेगी। स्वामी धर्मानन्द जी ने अपने विचार व्यक्त करते हुये कहा कि हमें स्वामी दयानन्द जी के बताये हुये मार्ग पर चलना चाहिये। उनके बताये मार्ग से चलने वाला व्यक्ति कभी भी गलत नहीं हो सकता। इस अवसर पर ईश्वर चंद रामपाल, अश्विनी डोगरा, रमेश मुखेजा, सुभाष आर्य, इन्दु आर्य, राजीव शर्मा, पंकज मेहता, चौधरी हरी चंद, ललित कालिया, हर्ष लखनपाल, नंद लाल ठुकराल, तिलक राज, संगीता मल्होत्रा, मदन लाल शर्मा, शादी लाल, संदीप मल्होत्रा, वंश आर्य, सुदर्शन आर्य, शिखा आर्य, अनु आर्य, रमा शर्मा, सुनयना शर्मा, अनिल मिश्रा, विनोद तिवारी, निखिल लखनपाल, अनु आर्य, राजीव कुन्दरा, लवलीन शर्मा, ओम प्रकाश मेहता, पूनम मेहता, बलराज, राजेश वर्मा, राकेश मिश्रा, रानी अरोडा, किरण शर्मा, सुरिन्द्र कुमारी, विशाल रामपाल, उमा देवी शुक्ला मौजूद थे।